पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

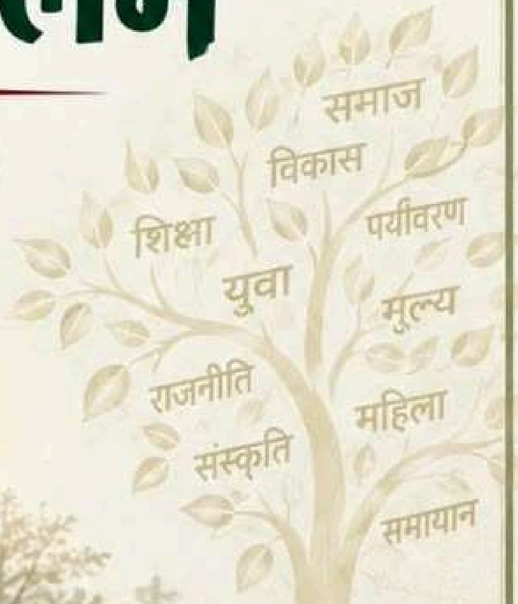

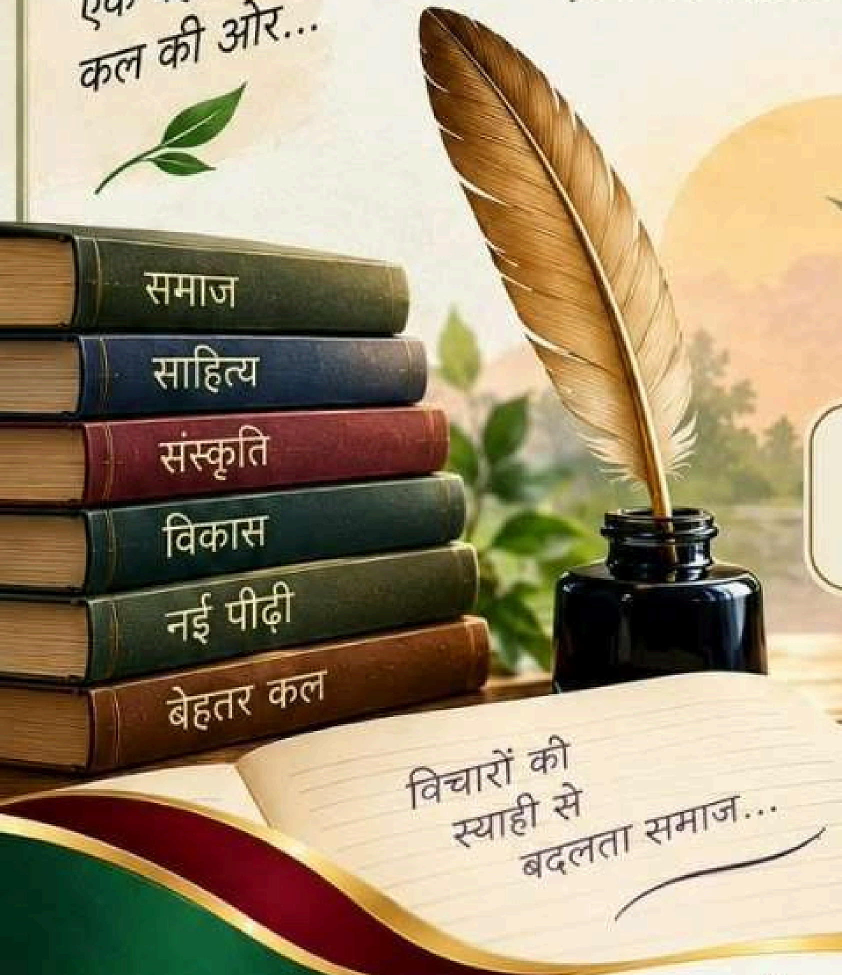

रचनाकार :-
नमिता दुबे मिशा

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका – **नमिता दुबे मिशा**

मरती इंसानियत
भटकता युवा

मरती इंसानियत
भटकता युवा

वर्तमान में सबसे बड़ी और विकराल समस्या इंसान का एक दूसरे पर भरोसा खत्म होना है। परिणाम अकेलापन खोखला जीवन।

आज चारो ओर जो अनिश्चितताओं भरा माहौल है वो केवल अंधा विकास नहीं है। वरन इंसान की बौद्धिक संपदा का उत्कृष्ट प्रदर्शन है।

पर अनचाहें ही इसमें सकारात्मक सोच के संग नकारात्मक विचार, अनायास ही शामिल हो गए हैं। इंसान केवल दौड़ रहा है। कभी भौतिक संसाधनों के विस्तार के लिए, कभी आर्थिक उन्नति के लिए।

अनचाहे मेहमान की तरह दिखावा, लालच क्रूरता ने इंसान के मन में स्थायी घर बना लिया है।

नतीजा असंतुष्टी, असंतुलन, असहयोग, अराजकता हमारे जीवन के स्थायी साथी बन बैठे हैं।

ये केवल एक चाह का परिणाम नहीं है। निरंतर विकासमान सोपान चढ़ती महात्वाकांक्षा की वो छाया है जिसे हर हाल में कमजोर बुद्धि को आधार बना कर ऊपर चढ़ना है। केवल बढ़ना है। ये परजीवी इतने शक्तिशाली हैं कि इंसान के जीवन से खुशी प्यार अपनापन सब सोंख कर उसे एक मशीनी मानव सा बना देते हैं।

ये इंसानी दिमाग से खेलते है। असंतुष्टी को इस हद तक प्रेषित करती है कि इंसान को इसकी पूर्ति के लिए ही अपनी सम्पूर्ण ताकत झोंक देनी पड़ती है।

बहुत दूर जाने की जरूरत भी क्या है।

चारों ओर देखिए बड़े बड़े खानदान जिनकी एकता ही उन्हें शीर्षस्थ बनाती थी। आज इतने टुकड़ों में बंटी चुके हैं कि जर्रा बराबर हैसियत रह गई है। पर अकड़ वही पुरानी। बंटवारा केवल चल अचल सम्पत्ति तक सीमित नहीं है उनका भरोसा विश्वास छिन्न-भिन्न हो चुका है।एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप इतने ज्यादा लगाए गए कि सम्मान की ईंट गिर कर चूर चूर हो गई है।

इसे हम आज के परिप्रेक्ष्य में घर और परिवार के साथ भी देख सकते हैं। परिवार में दो या तीन बच्चे होते हैं। माता-पिता का का झुकाव एक की ओर ज्यादा होता है। यही भेदभाव जो शुरू में किसी के लिए कोई अर्थ नहीं रखता। लेकिन भविष्य में अनेक मजबूत बांध बना देता है। जिसमें दीवारों से लिपटे अपने अपने इलाके तो होते हैं। पर कोई सेतु नहीं होता। जो इन्हें जोड़ सके। परिणाम अकेलापन। मुट्ठी की ताकत का मुकाबला अब खुले पंजे से करना वो भी हर अंगुली की दिशा अलग-अलग हो तो, समझने को कुछ नहीं बचता।

इंसानियत मर चुकी है। अपने संस्कार संस्कृति से विमुख हो कर भटकते युवा जिन्हें ना तो उम्र का लिहाज है ना सच तक पहुंचने की चाह। जरा सा किसी ने बरगलाया तो अपने भगवान पर भी प्रश्न उठाने में नहीं हिचकते।

बस नाम और दाम चाहिए। किसी भी तरह किसी भी काम से मिलें।

आज हम देखते हैं कि रील बनाने का जो सरूर सभी के ऊपर चढ़ा है। क्या युवा, क्या बच्चा और क्या बूढ़ा सभी ऊल जलूल बेमतलब की रील बना कर नाम और दाम कमाना चाहते हैं।

कुछ सफल भी होते हैं। ज्यादातर गुमनाम भीड़ का हिस्सा बन कर रह जाते हैं। ऐसा नहीं कि सभी रील बेकार नाचने वाली और फैशन वाली हैं। कुछ रील वाकई ज्ञानवर्धक मददगार साबित होती हैं पर ज्यादातर में उम्र का लिहाज करें वगैर जाने क्या दिखाया जा रहा है। ये लोग समाज को क्या संदेश देना चाहते हैं।

और आज नशे की तो पूछो ही मत। अकेलापन दूर करने का जबरदस्त साथी।
कुछ लोग अकेले ही रोज नियमित रूप से इसका पानी करते हैं। तो कुछ लोग दोस्तों संग, बिजनेस मीटिंग, या खुद को आधुनिक दिखाने के लिए इस दलदल में फंसे जाते हैं। रोज चीयर्स करके गिलास भर पेट में उड़ेली जाती है। पार्टी वाले दिन तो अनलिमिटेड होता है।
इससे भी आगे कुछ लोग ड्रग्स और अन्य नशे को अपना कर जीवन बर्बाद कर लेते हैं।

परिवार वाले रोकें तो बुरे। सुनने को मिल जाता है "हम बड़े हो गए हैं अपना बुरा भला समझते हैं"।
वही भरोसा और आदर भाव कम होना। परिवार के सदस्यों का एक दूसरे से कम्युनिकेशन कम होना। अकेलापन बढ़ना। पति पत्नी दोनों का नौकरी करना या अन्य तरीके से व्यस्त रहना। बच्चे अकेले रहता है या नौकरों के भरोसे रहता है।
एकल परिवार जिनमें बुजुर्ग नहीं होते अकेलापन भयावह रूप से अपनी पैठ बना चुका है। इसके लिए कभी परिस्थिति जिम्मेदार होती है तो कभी प्राइवेसी की चाह।
आधुनिकता की आड़ में अपनी संस्कार जनित जड़ों से कट जाना। और अस्थाई रूप से कहीं भी बस जाना। अक्सर ये जगह दूर महानगर ही होते हैं। बुजुर्ग जो गांव या छोटे शहरों के बड़े मकानों के आदी होते हैं उन्हें फ्लैट कलचर नहीं सुहाती। और वे छटपटाने लगते हैं। अकेलापन उन्हें डराता है।

आज अपनी सफलता के लिए अपनाएं शार्टकट भी बहुतों को बर्बादी की ओर ले जाते है। नतीजा गलत राह पर बढ़ते कदम या असफल हो कर खुद को मिटा देना।
सत्य यही है आज वर्तमान समय में जितनी ज्यादा भौतिक समृद्धि हमारे पास है उतना ही हम अंदर से बाहर की ओर दौड़ रहें हैं।
एक क्लिक में हर वस्तु हमारे हाथ में उपलब्ध हो जाती है।
बस पैसा होना चाहिए।
यही पैसा ही तो है जिसने इंसान को इंसान से दूर कर दिया है।
कोई अहंकार की इतनी सीढियां चढ़ चुका है कि खुद को भगवान से कम नहीं मानता।
कोई गरीबी को अभिशाप समझ कैसे भी पैसा कमाना चाहता है।

मेहनत,भरोसा ये सब आज आउटडेटेड है चुके हैं।
आज राजनीतिक परिदृश्य में देखें तो राजनीति तो हमेशा से ही अवसरवादी रही है।
दल बदलते नेता सिर्फ अपने बारे में सोचते हैं।
चमचों की भीड़ उन्हें जूठा भरोसा दिलाती है कि आप ही सही हो
बाकी सब ग़लत हैं।
जनता हतप्रभ खड़ी बंदरबाट देखती है।
ना देश, ना समाज, ना पार्टी सब लालच स्वार्थ के तराजू पर वजन बढ़ाते हैं।
और जिधर तराजू का पलड़ा झुकता है वहीं नेता अपना अंगद सा पैर जमा लेता है।
राजनैतिक दलों में युवाओं की भीड़ नेता को नियंत्रित नहीं करती वरन उसके पीछे-पीछे चलती है।
सरकारी सम्पत्ति को नुक्सान पहचाना कुछ लोग, इस देश में अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं।
और उनके विरुद्ध कानून भी कुछ नहीं करता।
आज के परिप्रेक्ष्य में समाज के खोखलेपन को दीमक से चाटते अवैध संबंध। जिन्हें हमारे युवा आधुनिकता मानते हैं। पर इससे कितने जीवन असमय काल कवलित हो जाते हैं। परिवार उजड़ जाते हैं। बच्चे अनाथ हो जाते हैं।
वही भरोसा विश्वास का क्षय ही समाज के पतन का मूल कारण है।
आज के समय में कई बार देखा है इंसान से ज्यादा तो जानवर वफादार हैं।
थोड़े से खाना और देखभाल करने से वे अपने मालिक के लिए जान की बाजी भी लगा देते हैं।
और इंसान बुजुर्ग माता-पिता को वृद्धाश्रम में छोड़ने से भी नहीं हिचकता।
अवैध या अनचाहे बच्चे डस्टबिन में फेंक दिए जाते हैं।
"अजीब हालत है आज, भगवान तेरी बनाई दुनिया की,
कहां जा कर रूकेगा पतन का ये सिलसिला"
आज अगर भगवान भी आ जाएं तो इंसान तुरंत उन्हें पूछेगा "किसके भगवान हो?"
हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई?

- नमिता दुबे मिशा

लेखक परिचय

नाम –नमिता दुबे मिशा

स्थान: नोएडा (उप्र)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.................**नमिता दुबे मिश्रा**.................जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।
उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...